MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta®

Peer Reviewed International Multilingual Research Journal
Issue-43, Vol-01, July to Sept. 2022

Editor
Dr.Bapu G. Gholap

MAH/MUL/ 03051/2012 **ISSN :2319 9318**

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

July To Sept. 2022
Issue 43, Vol-01

Date of Publication
01 July 2022

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

40) आधुनिक काव्य संवेदना का विकास और कबीर
डॉ. राम बाबू मेहर, सागर, (म.प्र.) ||177

41) उदयपुर में बेदला ग्राम के कार्तिक स्वामी मन्दिर का शिलालेख (उदयपुर नगर की ...
रामसिंह राठौड़, उदयपुर (राज.) ||181

42) उपन्यासकार कृष्णा सोबती के साहित्य में स्त्री संवेदना
डा. गीता एच. तलवार, कारवार [उत्तर कन्नड] ||186

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
International Multilingual Research Journal
9850203295

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

का कारण भी है। सहस्राब्दों में निर्मित और विकसित मानवीय मूल्य अब विघटित होते जा रहे हैं, यह हमारी वर्तमान सभ्यता की चिंता का केन्द्रीय विषय है। यों तो संक्रमण और मूल्यहीनता की स्थिति मानवीय इतिहास में अनेक बार आई है — संक्रमण का रोना लगभग हर युग के इतिहासकार ने रोया है — पर यह मानना होगा कि अब तक के संक्रमण अपनी प्रकृति में संशोधन और सुधारपरक अधिक थे। इधर प्राय: द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के बाद से तो मूल्य सम्बन्धी मौलिक आधार ही जैसे उखड़ गये हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. लोक जागरण और हिन्दी साहित्य रामविलास शर्मा वाणी प्रकाशन नई दिल्ली

२. लोक साहित्य और संस्कृति दिनेश्वर प्रसाद जय भारती प्रकाशन, इलाहाबाद

३. लोक साहित्य का अध्ययन डॉ. विलोचन पाण्डेय लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद

४. लोक साहित्य की भूमिका कृष्णदेव उपाध्याय साहित्य भवन ९३, जीरो रोड, इलाहाबाद

५. लोकधर्मी नाट्य परम्परा डॉ. श्याम परमार हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी

६. समकालीन प्रतिनिधि कवि अनन्त कीर्ति तिवारी

७. साठोत्तर हिन्दी काव्य में डॉ. एस. गम्भीर विद्या विहार, गाँधी नगरराजनीतिक चेतनाए कानपुर

८. साठोत्तरी कविता में जनवादी नरेन्द्र सिंह वाणी प्रकाशन

⌘⌘⌘

41

उदयपुर में बेदला ग्राम के कार्तिक स्वामी मन्दिर का शिलालेख

(उदयपुर नगर की स्थापना के विशेष संदर्भ में)

रामसिंह राठौड़
शोधार्थी, इतिहास विभाग,
पेसिफिक विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

वि.सं. १६२६, शक वर्ष १४९२ ई. सन् १५६९ के वर्ष में प्रताप के पिता महाराणा उदयसिंह के शासनकाल में उत्कीर्ण यह शिलालेख उदयपुर नगर की उत्तर दिशा में बेदला ग्राम के कार्तिक स्वामी मन्दिर के सन्निकट एक बड़े चबुतरे पर निर्मित छत्री पर बने स्मारक स्तम्भ पर है। सर्वप्रथम डॉ. जी.एल. मेनारिया[१] ने २३ जुलाई १९८४ को इसे स्थानीय राजस्थान पत्रिका समाचार पत्रों में प्रकाशित कराया था। इस मन्दिर के पास उदयसिंह कालीन जीर्ण–क्षीर्ण महल, एक बावड़ी भी है। उक्त शिलालेख स्मारक स्थल के निर्माण की ज्योतिष शास्त्रानुसार काल गणना का सूक्ष्म शुभ समय प्रथम पांच पंक्तियों में उत्कीर्ण किया है। पांचवीं पंक्ति से ९वीं पंक्तियों में तत्कालीन महाराणा श्री उदयसिंह एवं राज्य के प्रधान पदाधिकारी रामामसाणी का उल्लेख हुआ है। पंक्ति १० से १२ में स्मारक स्थल पर दिवंगत सति स्तम्भ के पूर्वजों का नामोल्लेख किया है (सम्भवत: उदयसिंह को पन्नाधाय जिस वारि जाति के साथ चित्तौड़ से उसे कुम्भलगढ़ सुरक्षित ले गयी थी, उस परिवार का स्तम्भ है अथवा महाराणा उदयसिंह शासन में प्रधानमंत्री रामामसाणी की स्मृति में निर्मित है, अभी इस विषय पर शोध करने की जरूरत है।)

प्रशस्ति में सबसे ऊपर सूर्य एवं चाँद के प्रतीक बने हुए हैं, जिनके नीचे एक पुरूष व नारी की खड़ी प्रतिमाएं हैं, जो रामामसाणी अथवा पन्नाधाय के

सहयोगी वारि परिवार की होगी। शिलालेख की भाषा संस्कृत व लिपि देवनागरी है। अन्तिम तीन पंक्तियों में यहाँ निर्मित देवली (मंदिर) को भेंट स्वरूप इस मन्दिर स्मारक स्थल निमित ३० रका भूमि सुतार लाला को देने का उल्लेख किया गया है।

बेदला के शिलालेख का मूल पाठ —

।। स्वस्ति श्री संवत् १६२६ वर्षे शक १४९२ प्रवर्तमाने
।। उत्तरायणे।। ग्रीष्मऋतु।। आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे
।। ऐकादसी सुक्त घटी।। ४८ वि ३० श्री महाराजा अद्य
।। राजा रणा श्री उदिसिंग जी पट्ट।। राकुल
ग्रही बारी वंष जात न।। पाला सहिधन देवलो
प्राप्ति श्री।। रामामसाणी पद पंवासु जाबरी
।। लो वी देवलाक वसुंधरा रका ३०
सुतार लाला दी धाम हादि लिखांतु शुभ नव कल्याणमस्तु

शिलालेख का ऐतिहासिक महत्व —

इस लेख से ज्ञात होता है कि रामामसाणी सन् १५६९ तक उदयसिंह एवं प्रताप के साथ उदयपुर स्थित गिर्वा की पहाड़ियों में रहा और वह सन् १५५९ से १५६९ तक उदयपुर नगर के निर्माण और नवीन राजधानी बसाने के महत्वपूर्ण कार्य में संलग्न रहा होगा। बेदला के लेख में वारी वंश के उल्लेख से स्पष्ट है कि पन्नाधाय ने जिस उदयसिंह को पाला उस परिवार के मुखिया के देवलोक पर यहाँ उसका मूर्ति स्मारक और एक छतरी बनवायी। लेख में महाराणा द्वारा ३० बीघा भूमि प्रदान करने की सूचना मिलती है। यहीं पास में कुछ छतरियाँ, स्मारक और एक प्राचीन मंदिर निर्मित कराया, जिसे स्थानीय लोग कार्तिक स्वामी का मंदिर पुकारते हैं।

हल्दीघाटी के युद्ध में प्रताप के सहयोगी यौद्धाओं में रामामसाणी का नाम नहीं होकर उसके पुत्र जगन्नाथ मसाणी का होना यह प्रमाणित करता है कि बेदला के लेख के तीन वर्ष के दौरान याने १५६९ से १५७२ तक उदयसिंह ने गोगुंदा को अस्थाई राजधानी चुना, वहीं रहकर उदयसिंह की मश्त्यु हुई। अत: मेरी धारणा है कि रामामसाणी का निधन उदयसिंह के जीवन के अंतिम दिनों में बेदला में हुआ होगा। जहाँ उसका स्मारक एवं छतरी तत्कालीन इतिहास की जानकारी का पुरातात्विक प्रमाण है। यहां बेदला ठिकाने के संक्षिप्त इतिहास का उल्लेख करना प्रासंगिक है, क्योंकि महाराणा उदयसिंह द्वारा चित्तौड़ छोड़कर उदयपुर गिर्वा क्षेत्र में नई राजधानी के निर्माण और अन्य जनोपयोगी उदयसागर झील, राजमहल, सामन्तों और अन्य पदाधिकारियों के निवास हेतु बनाए गए स्मारकों को आज भी ऐतिहासिक विरासत के साक्ष्य के रूप में देखा जा सकता है। इसी तरह बेदला के निकट स्थित चिकलवास गांव में उदयसिंह के समय के चारभुजा मन्दिर (लक्ष्मीनारायण मन्दिर) में उपलब्ध शिलालेख और इस गांव के रावराणा परिवार के सजरे के आधार पर यह प्रमाणित होता है कि उदयपुर गिर्वा स्थित बेदला ठिकाना का अपना विशिष्ठ महत्व है। जो यहाँ प्राप्त कार्तिक स्वामी के मन्दिर के निकट पुराने खण्डहरनुमा महल, बावड़ी और बेदला ठिकाने के पश्चिमी दिशा में ऐतिहासिक बावड़ी को देखकर यह प्रमाणित होता है कि उदयसिंह ने चित्तौड़ पर अकबर के आक्रमण (१५६७—६८) के पूर्व ही उदयपुर नगर की स्थापना कर इसे राजधानी का रूप दे दिया था।

हाल ही में दिनांक १५ दिसम्बर २०२१ को ग्लोबल हिस्ट्री फोरम के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. जी. एल. मेनारिया, फोरम के सचिव इतिहासकार डॉ. अजातशत्रु सिंह शिवरती के नेतश्त्व में मेवाड़ इतिहास परिषद के अध्यक्ष डॉ. गिरीशनाथ माथुर, पूर्व विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग राजस्थान विद्यापीठ वि. वि. उदयपुर, राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सा संघ के

डॉ. मनोज भटनागर, सचिव श्री गुणवन्तसिंह देवड़ा, पेसिफिक वि.वि. के शोधार्थी श्री रामसिंह राठौड़, बड़गाँव पंचायत समिति के उप–प्रधान प्रतापसिंह राठौड़, एडवोकेट प्रेमसिंह पंवार, विजयसिंह धनेरिया इत्यादि के दल ने उदयपुर गिर्वा स्थित महत्वपूर्ण बेदला ठिकाने के राजमहल, ऐतिहासिक बावड़ियाँ, मन्दिरों व अन्य पुरा सम्पदा का सर्वेक्षण किया। इस अवसर पर डॉ. गिरीशनाथ माथुर ने बताया कि मुस्लिम आक्रमणों के समय मेवाड़ की राजधानियाँ समय–समय पर स्थानान्तरित होती थी, बेदला की एक दिशा में नागदा एवं दूसरी तरफ देबारी चित्तौड़ मार्ग पर गिर्वा में आहड़ भी राजधानी थी। आहड़ व बेदला की भौगोलिक एवं सामरिक स्थिति अकबर के चित्तौड़ से उदयपुर में नयी राजधानी के चयन की दशष्टि से महत्त्वपूर्ण होने से उदयपुर गिर्वा को महाराणा उदयसिंह ने अपने मुगल–पठान आक्रमणों की पृष्ठभूमि में यहाँ उदयसागर झील एवं राजमहल बनवाये थे।

डॉ. मनोज भटनागर ने सर्वेक्षण दल के सम्मुख अपने पिता प्रसिद्ध इतिहासकार स्व. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भटनागर के द्वारा अनुसंधान में प्राप्त संस्कृत ग्रंथ अमरकाव्यम् के आधार पर उदयपुर नगर की स्थापना वि.सं. १६२४ याने ई.सन् १५६७ में करने के प्रमाण प्रस्तुत किए। डॉ. जी. एल. मेनारिया ने बेदला के कार्तिक स्वामी मन्दिर के शिलालेख में लिखित तिथि वि.सं. १६२६ ई.सन् १५६९ को महाराणा उदयसिंह एवं मेवाड़ के प्रधानमंत्री रामामसाणी इत्यादि की उपस्थिति के आधार पर बताया कि उदयपुर नगर की स्थापना निर्विवाद रूप से वि.सं. १६२४ में हो गयी थी। उदयपुर राजमहल में महाराणा के प्रवेश करने का श्लोक अमरकाव्य में स्पष्ट लिखा है। उदयपुर नगर में महाराणा द्वारा नई राजधानी और राजमहल के प्रवेश से सम्बन्धित तिथि के बारे में पूर्व निदेशक राजस्थान विद्यापीठ संस्थान उदयपुर के डॉ. देव कोठारी द्वारा अमरकाव्य इत्यादि ग्रंथों के सम्पादन के तहत योगदान रहा है साथ ही प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के शोध सहायक डॉ. राजेन्द्रनाथ पुरोहित के द्वारा भी साक्ष्य उपलब्ध कराए गए। प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के शोध ग्रंथों के आधार पर उक्त तिथि की परिपुष्टि होती है। अतः उदयपुर नगर की स्थापना की तिथि निर्धारण हेतु बेदला का नवीन शिलालेख मूल्यवान सिद्ध होगा।

उदयपुर की स्थापना का आधार : अमरकाव्यम् सर्ग १४ पद्य ७३ –

महाराणा राजसिंह कालीन ग्रन्थ अमरकाव्यम् जिसकी रचना पं. रणछोड़ भट्ट ने की थी। उसने ग्रन्थ के सर्ग १४ पद्य ७३ में लिखा कि वि.सं. १६२४ चैत्र शुक्ल ११ सोमवार के दिन महाराणा उदयसिंह ने नगर में प्रवेश किया और अपने नाम से इसका नाम उदयपुर रखा। इस हेतु निम्नलिखित श्लोक इस प्रकार है –
''चतुरधिके विश्त्यंद के षौड़शाख्यै, शत इह मधु शुक्ले का दशौ वासतरागे। नगर उदयसिंहों वासमरिभन्वितेत् उदयपुर शुभाख्यमचक्रे ग चक्रः।।''

अमरकाव्यम् ग्रन्थ के अतिरिक्त उदयपुर के प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान संग्रहालय में उपलब्ध प्राचीन ग्रन्थ संख्या ४२६२ के पृष्ठ १२ पर भी यही तिथि लिखि हुई है। जो इस प्रकार है – सं. १६२४ चेत सुदी ११ श्री उदेसिंघ जी उदयपुर वसावा रो आंख की दो। जो कि अमरकाव्यम् के सर्ग १४ पद्य ७३ में प्रमाण स्वरूप साक्ष्य है।

परिशिष्ठ १ : बेदला ठिकाना – संक्षिप्त परिचय

दी रूलिंग प्रिसेंज चीफ्स एण्ड लीडिंग परसनेजेज इन राजपुताना[२] नामक पुस्तक में उदयपुर रियासत के ठिकाना बेदला का उल्लेख करते हुए डॉ. जी. एल. मेनारिया ने बताया कि मेवाड़ की राजधानी जब चित्तौड़ थी, तो बेदला के चौहान वंशज व जागीरदार जो राज्य के प्रथम श्रेणी के थे, महाराणा अमरसिंह प्रथम के शासनकाल के पूर्व इस ठिकाने के सामन्त गंगरार में जागीरी के स्वामी थे, परन्तु राणा उदयसिंह के द्वारा राजधानी उदयपुर स्थानान्तरित होने के बाद महाराणा अमरसिंह प्रथम ने गंगरार के बदले उदयपुर गिर्वा क्षेत्र में उक्त जागीरी प्रदान कर दी इसके बदलाव के कारण इसका नामकरण भी बेदला हुआ।

जहाँ तक बेदला के जागीरदारों के वंशवृक्ष का सम्बन्ध है, सी. एस. बेले ने, बीकानेर के ऐजेन्ट जी. एच. ट्रेवर की रिपोर्ट (राजपूताने के रूलिंग फैमेलीज का इतिहास लिखने बाबत् गवर्नर जनरल को भेजी गयी रिपोर्ट सन् १८७९) के आधार पर सन् १९०८ में

प्रकाशित पुस्तक में लिखा है कि सम्पूर्ण राजपूताना में कुल छः जातीय राजपूत राज्य का शासन रहा है। इनमें १) राठौड़ — बीकानेर, जोधपुर, किशनगढ़, २) मेवाड़ (उदयपुर) में सिसोदिया — उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़ व शाहपुरा, ३) चौहान — हाड़ा चौहान इसमें बूंदी व कोटा के राज्य तथा देवड़ा चौहान — सिरोही, ४) जाडोन — भाटी — करौली, जैसलमेर, ५) कच्छावा — जयपुर, अलवर (नरूक्का), ६) झाला —झालावाड़, ७) जाट राज्य — भरतपुर, धौलपुर (ये दोनों ही राज्य प्राचीन यदुवंशी शाखा से है, ये करौली व जैसलमेर की शाखा से सम्बन्धित है)

मेवाड़ के प्रथम श्रेणी के सरदारों का नक्शा — पृष्ठ ५४—५८ तक, श्यामलदास, वीर विनोद, प्रथम खण्ड[३] इस पुस्तक में उदयपुर रियासत (मेवाड़ राज्य) के प्रमुख जागीरदारों को किस महाराणा द्वारा किस वर्ष में कौनसा ठिकाना पट्टों पर दिया उसका विवरण दिया गया है।

बेदला का ठिकाना[४] महाराणा अमरसिंह प्रथम के समय वि.सं. १६५३ ई. सन् १५९७ में बल्लू चौहान को मिला इस ठिकाने के स्वामी चौहान वंश पदवी राव है। ''वीर विनोद'' नामक पुस्तक के लेखन याने राणा सज्जनसिंह के समय बेदला का राव कर्णसिंह था। इस ठिकाने को पुराने ठिकाने गंगरार (चित्तौड़ की राजधानी तब) के बदले उदयपुर गिर्वा में देने से इस अदल—बदल से इसको बेदला कहा जाता है। सन् १५९७ से महाराणा भुपालसिंह के समय राव मनोहरसिंह तक इसी चौहान वंश के अधिकार में रहा। इस ठिकाने का अदल—बदल नहीं हुआ।

सन् १९०८ में प्रकाशित Ruling Princes Chiefs and leading personage in Rajputana शीर्षक पुस्तक के पृष्ठ १७०—१७१ पर बेदला ठिकाने के तत्कालीन राव नाहर सिंह तक इस वंश का संक्षिप्त उल्लेख हुआ है। बेदला ठिकाने की वंशतालिका का पुरातात्त्विक साक्ष्य सन् १९८४ में डॉ. जी. एल. मेनारिया ने बेदला राजमहल के पीछे पश्चिमी दिशा के चान्दपोल बाहर एक ऐतिहासिक प्राचीन बावड़ी के प्रवेश द्वार की ताकों में लगे शिलालेखों से ज्ञात की। इसकी पुष्टि प्रताप शोध संस्थान, उदयपुर में उपलब्ध बेदला की ख्यात से भी होती है। इसमें लिखा है कि बेदला[५] ठिकाने के अधीन ६२ गांव थे जिनसे वार्षिक आय ८०,००० रूपये थी, उसमें से ५२२२ रूपये ठिकाने को उदयपुर दरबार को कर के रूप में देना पड़ता था। बेदला के राव नाहरसिंह का जन्म २७ अगस्त १८९५ में हुआ। वे अजमेर के मेयो कॉलेज में शिक्षित हुए। यह अपने पिता राव कर्णसिंह के सन् १९०० में उत्तराधिकारी थे। कर्णसिंह मेवाड़ में महद्राज सभा का सदस्य था। अंग्रेज सरकार द्वारा इन्हें राय बहादुर का खिताब मिला था। बेदला के राव नाहरसिंह के प्रपिता राव वख्त सिंह बड़ा बहादुर था। १८५७ की सैनिक क्रान्ति के संकट में मेवाड़ के महाराणा स्वरूपसिंह ने कप्तान शावर्स[६] के अनुरोध पर बेदला राव वख्त सिंह को एक सैन्य टुकड़ी लेकर अंगेजों की सहायतार्थ उदयपुर से नीमच भेजा। इनके साथ सहीवाला अर्जुनसिंह[७] भी था। १८५७ के विद्रोह के समय ब्रिटिश छावनियों से असहाय अंग्रेज परिवारों को जिन्हें आबू व नीमच से उदयपुर लाकर सुरक्षित रखा। इस कार्य की सेवा से प्रसन्न होकर ब्रिटिश सरकार ने इन्हें सी.आई.ई. के पद से सम्मानित किया। नीमच छावनी के यूरोपीय परिवारों को डूंगला से उदयपुर सुरक्षित लाने व महाराणा के आदेश से उनको व माउण्ट आबू की एरणपुरा छावनी से उदयपुर आये सभी यूरोपीय परिवारों को संकट के समय जगमन्दिर में ठहराया और जब तक सैनिक विप्लव समाप्त नहीं हुआ, तब तक महाराणा स्वरूपसिंह बेदला राव के सहयोग से शरण आये यूरोपियन परिवारों की रक्षा करने के कारण प्रसिद्ध है। वस्तुतः बेदला व कोठारिया ठिकाने के चौहान सामन्त मूलतः अजमेर के भारत प्रसिद्ध पृथ्वीराज चौहान के उत्तराधिकारी है। सन् ११९३ में मोहम्मद गौरी का अजमेर पर अधिकार होने अजमेर व दिल्ली के अन्तिम हिन्दू राजवंश के उत्तराधिकारी चित्तौड़ में शरण आये तब से ही १२वीं सदी से २०वीं सदी तक बेदला के चौहान मेवाड़ रियासत के सहयोगी रहे। अतः स्पष्ट है कि बेदला के तत्कालीन चौहान वंशीय जागीरदार मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह एवं महाराणा प्रताप के सहयोगियों में प्रमुख थे। १२वीं सदी से महाराणा भूपालसिंह तक बेदला के चौहान शासकों का योगदान

चीर स्मरणीय है।

परिशिष्ठ २ : चिकलवास ग्राम का शिलालेख—

चिकलवास के शिलालेख को सर्वप्रथम डॉ. जी. एल. मेनारिया व डॉ. अजातशत्रुसिंह ने पढ़ा व उसका फोटो लिया। इसमें यहाँ प्राचीन चारभुजानाथ (लक्ष्मीनारायण) मन्दिर के प्रवेश द्वार पर यह शिलालेख उत्कीर्ण है जो महाराणा रायमल के समय बना था, परन्तु पुराना जीर्णशीर्ण होने से उदयसिंह के समय पक्का बनाया व मन्दिर को परणाया। स्थानीय रावराणा के वंशजों के सजरे को तैयार किया जो गांव के एक स्थानीय अध्यापक के घर में देखने को मिला। मुण्डारा गांव के राव की एक प्राचीन पोथी में बेदला के निकट चिकलवास के मन्दिर सम्बन्धित एक सजरा बनाया जो जिसमें महाराणा उदयसिंह के समय यहाँ एक लक्ष्मीनारायण के मन्दिर के जीर्णोद्धार करवाने का वर्णन मिलता है। चिकलवास गांव का सजरा यहाँ मन्दिर के पास रहने वाले रावराणा के निजीगश्ह में उपलब्ध है जिसमें राणा रायमल से लगाकर महाराणा फतहसिंह तक के रावराणा परिवार का वंशवश्क्ष दिया गया। इसके एक तरफ मुण्डारा गांव के रावजी शम्भूसिंह ने २५.१०.७६ को पुराने सजरे नकल के आधार पर चिकलवास गांव के लक्ष्मीनारायण मन्दिर के निर्माण जीर्णोद्धार को सत्यापित किया।

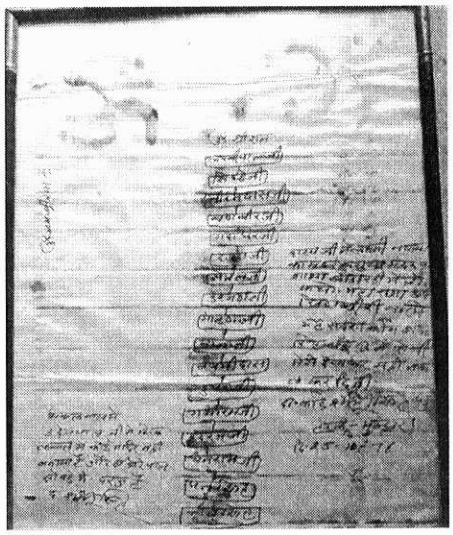

महाराणा उदयसिंह के समय चिकलवास गांव के तत्कालीन रावराणा श्री दास्य जी ने चिकलवास गांव में रायमल के समय निर्मित मन्दिर को पक्का बनवाया व परणाया। जिसका उल्लेख स्थानीय रावराणा परिवार के निजी संग्रहालय में उपलब्ध एक सजरे में हुआ।

अम्बेरी का शिलालेख का मूलपाठ (१४ जुलाई १९८६ को प्रकाशित) —

''श्री राज जी महाराजा महाराणा श्री उदिसिंघ जी श्री मुख वचनात। श्री प्रागदास ठडारस्त हल खेताम ५२ अम्बेरी जवरीरते गतुते दमासी हर्षेत दव। मुकन्ददपाल स. १६१७ वर्षे शके १४८१ सौमे ९ चैत्र मासे।''

अम्बेरी के शिलालेख का महत्व —

चित्तौड़ के पतन के वर्ष वि.सं. १६२४ (१५६८) के पश्चात् प्रताप पुनः उदयसिंह के साथ गिर्वा की पहाड़ियों में आए। इसकी पुष्टि हाल ही में ग्राम बेदला से प्राप्त वि.सं. १६२६ (सन् १५६९) के शिलालेख से होती है। अम्बेरी और बेदला से प्राप्त शिलालेखों में ९ वर्षों का अन्तर है इससे निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मेवाड़ के तत्कालीन प्रधानमंत्री रामामसाणी की देखरेख में उदयसिंह चित्तौड़ में जयमल और पत्ता को भार सौंप कर परिवार सहित ढ़ीकली गाँव में छिपकर रहे, जैसा वीर विनोद में उल्लेखित है। वस्तुतः मेरी मान्यता है कि अकबर के चित्तौड़ आक्रमण के दौरान उदयसिंह बेदला माता मंदिर के निकट रामामसाणी के साथ छिपकर रहे। बेदला में प्राचीन महल, बड़ी बावड़ी और तीन चार छतरियाँ और मकानों के अवशेष देखे जा सकते हैं। यह स्थान मुगल सेना के आक्रमण के समय सर्वाधिक सुरक्षित था क्योंकि शत्रु सेना के देबारी मार्ग से प्रवेश के समय महाराणा यहाँ से एक ओर ईसवाल होकर कुम्भलगढ़ और दूसरी तरफ श्री एकलिंगजी के दर्रे से निकलकर कुम्भलगढ़ प्रयाण कर सकते थे।

सन्दर्भ —

१) डॉ. जी. एल. मेनारिया, शोध लेख, उद्धृत, महाराणा प्रताप से सम्बन्धित स्त्रोत एवं स्थान, सम्पादक सज्जनसिंह राणावत, प्रो. के. एस. गुप्ता, श्री स्वरूपसिंह चूण्डावत, महाराणा प्रताप स्मारक समिति द्वारा प्रकाशित ग्रंथ, प्रकाशक चिराग प्रकाशन, उदयपुर वर्ष २००२,

पृष्ठ १०४ से ११०

२) दी रूलिंग प्रिसेंज चीफ्स एण्ड लीडिंग परसनेजेज इन राजपुताना, १९०८, पृष्ठ १७०—१७१

३) श्यामलदास, वीर विनोद, भाग १, पृष्ठ ५४—५८

४) History of Mewar by Capt. J. C. Brooks, page 8 – 9

५) उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग २, पृष्ठ १०७८—१०८२

६) कैप्टन शावर्स, मिसींग चैप्टर ऑफ इण्डियन म्यूटिनी, १८५९, पृष्ठ १७०—१८२

७) सहीवाला अर्जुनसिंह का जीवन चरित्र, पृष्ठ ७५—९०

साक्षात्कार —

१) दिनांक २६.१२.२०२१ इतिहासकार प्रो. डॉ. गिरीशनाथ माथुर, पूर्व विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग, राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर।

२) दिनांक २६.१२.२०२१ इतिहासकार डॉ. जी. एल. मेनारिया, संस्थापक अध्यक्ष ग्लोबल हिस्ट्री फोरम, उदयपुर।

३) दिनांक २६.१२.२०२१ इतिहासकार डॉ. अजातशत्रु सिंह शिवरती, सचिव ग्लोबल हिस्ट्री फोरम, उदयपुर। (तुलसीप्रज्ञा, १९९५—९६ में प्रकाशित)

⌘⌘⌘

42

उपन्यासकार कृष्णा सोबती के साहित्य में स्त्री संवेदना

डा. गीता एच. तलवार

सहायक प्रद्यापिका एवं अध्यक्षा, हिंदी विभाग,

सरकारी. कला और विज्ञान [स्वायत्त] महाविद्यालय

कारवार [उत्तर कन्नड]

****

इक्कीसवीं सदी में स्त्री विषयक लेखन में उल्लेखनीय सफलता और स्थिरता दिखाई देती है। इस दौर की प्रमुख लेखिकाएं है– गीतांलिश्री, क्षमा शर्मा, प्रभा खेतान, मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्गल आदि । भारतीय स्त्री की समस्याओं को समझने में मन्नु भंडारी, उषा प्रियंवदा, मैत्रेयी पुष्पा, दिप्ति खंडेलवाल मालती जिशी आदि की कृतियाँ रेखांकन योग्य हैं। कृष्णा सोबती, रमणिका गुप्ता, नासिरा शर्मा आदि ने स्त्री–अस्मिता पर बेबाकी से साहित्य–सृजन किया है। अमृता प्रीतम, कमलादास, तसलीमा नसरीन, अरुंधती राय आदि ने साहसपूर्ण आत्मकथाएँ लिखाकर स्त्रि–विमर्ष को समृद्ध किया है। हिंदी की नारीवादी आलोचना को राजेंद्र यादव पुरुषोत्तम, अरविंद जैन कमलाप्रसाद, सुधीश पचौरी आदि आलोंचकों ने स्त्री को निजी भाषा रचने की प्रेरणा दी है। स्त्री विमर्श की लेखिकाओं का विचार है कि श्रमिक स्त्री के बिना स्त्री– विमर्श का रचना संसार एकांगी है । वर्तमान स्त्री–विमर्ष में स्त्री–लेखन की संभावनाओं और सीमाओं

Vidyawarta®
International Multilingual Research Journal
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed Pin-431126 (Maharashtra)
ISO9001-2015 CERTIFIED

Certificate Of Publication

This is to certify that the review board of our research journal accepted the research paper/article titled उदयपुर में बेदला ग्राम के कार्तिक स्वामी मन्दिर का शिलालेख (उदमपुर नगर की स्थापना के विशेष संदर्भ में) of Dr./Mr./Miss/Mrs. राम सिंह राठौड़

It is peer reviewed and published in the Issue 43 Vol. 01 in the month of JULY To SEPT. 2022.

Thank you for sending your valuable writing for Vidyawarta Journal

Indexed (IIJIF)
Impact Factor 8.14
Govt.of India, Trade Marks Registry Regd.No.2611690
ISSN-2319 9318

Editor in chief
Dr.Bapu G.Gholap

October to December 2023
E-Journal
Volume I, Issue XLIV

RNI No. – MPHIN/2013/60638
ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793
Scientific Journal Impact Factor- 7.671

Naveen Shodh Sansar

(An International Refereed/ Peer Review Research Journal)

नवीन शोध संसार

Editor - Ashish Narayan Sharma

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2, **NEEMUCH** (M.P.) 458441, (INDIA)
Mob. 09617239102, **Email** : nssresearchjournal@gmail.com, **Website** www.nssresearchjournal.com

129. महिला के गरीबी उन्मूलन में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन का एक आर्थिक अध्ययन 431
(झाबुआ जिले के राणापुर विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में) (डॉ. हेमता डुडवे)

130. Jammu & Kashmir Post Article - 370 Abrogation: An Analysis of Socio-Economic 434
and Political Dynamics (Rafia Banoo Dar)

131. State of Democracy in Bangladesh: From Praetorianism to One Party Rule (Rafia Banoo Dar)..... 437

132. राजस्थान का कला दृश्य एवं समकालीन प्रकृति चित्रकार (डॉ.ज्वाला प्रसाद कलोशिया)..... 440

133. जनजातीय वर्ग की राजनीतिक जागरूकता का लिंग एवं शिक्षा के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन (राकेश देवड़ा)..... 443

134. The Role and Impact of the Comptroller and Auditor General (CAG) of India in Promoting 445
Financial Accountability and Transparency (Bhupendra Tank)

135. भीलवाड़ा जिले का प्रमुख धार्मिक स्थलों का अध्ययन पर्यटन के विशेष संदर्भ में (कमलेश कुमार नाथ)..... 448

136. कालिदास साहित्य में पर्यावरण चेतना (डॉ. धीरज प्रकाश जोशी, विपिन व्यास)..... 451

137. 'समयसार' के मंगलाचरण में ''सुदकेवली'' (प्रो. सुदीप कुमार जैन) 453

138. भारत के आर्थिक पर्यावरण पर वस्तु एवं सेवाकर के प्रभाव का अध्ययन (प्रवीण कुमार सोनी)..... 457

139. Exploring the Underlying Theme of Humanism in Selected Tagore's Short Narratives 460
(Dr. Hitkaran Singh Ranawat)

140. संस्कृति के वाहक राजस्थान के लोक नृत्य (कबीर शरण) 464

141. जनजातीय महिलाओं के सशक्तीकरण में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन 469
(अंजली रजक)

142. लोक न्याय प्रणाली (डॉ. नितीश ओबेराइन)..... 472

143. Effect of Yoga and Physical Training on Selected Performance Determined Variables 474
Among Volleyball Players (Dr. Bhupender Sharma)

144. मानव विकास : विश्लेषणात्मक अध्ययन (डॉ. दिनेश कुमार कटुतिया)..... 477

145. कर्मचारियों को संतुष्ट एवं निष्ठावान रखने में क्षतिपूरण की भूमिका (डॉ. इन्दु अरोडा) 479

146. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: उच्च शिक्षा में शैक्षिक नवाचार एवं शिक्षकों की शैक्षिक समस्यायें 482
(केशव लाल गुप्ता, डॉ.देवेन्द्र कुमार अग्रवाल)

147. लोकसंत महाराज चतुरसिंह जी बावजी (रामसिंह राठौड़, डॉ. अजातशत्रु सिंह शिवरती) 484

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
October to December 2023, E-Journal, Vol. I, Issue XLIV

लोकसंत महाराज चतुरसिंह जी बावजी

रामसिंह राठौड़* डॉ. अजातशत्रु सिंह शिवरती**

* शोधार्थी (इतिहास) पेसिफिक विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत
** प्राध्यापक (इतिहास) पेसिफिक विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

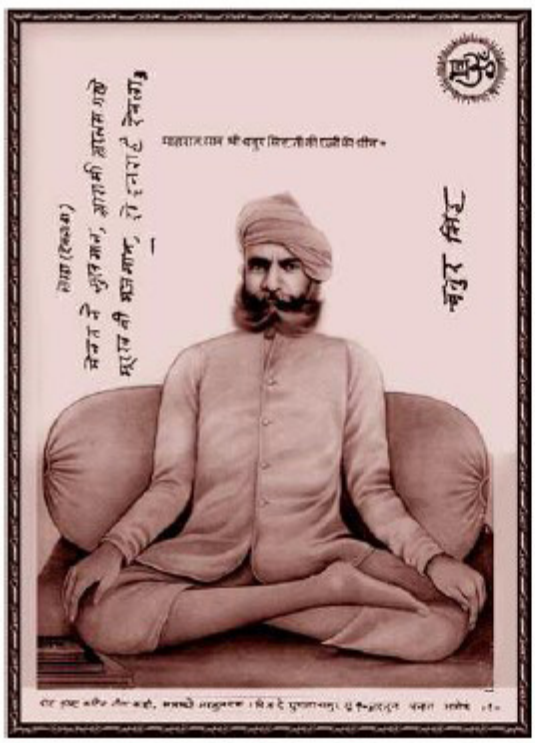

प्रस्तावना – लोकसंत महाराज चतुर सिंह जी बावजी मर्यादा पुरूषोत्तम रामचन्द्र के पवित्र वंश मेवाड़ राजवंश में योग की अलख जगाने वाले बप्पा रावल की परम्परा के संत थे और मेवाड़ की युवरानी भक्त शिरोमणी मीराबाई की भक्ति से ओतप्रोत थे। मीरां ने जिस भक्ति की लहर को आरम्भ किया, उसे महाराणा प्रताप की पत्नी अजबदे ने आगे बढ़ाया और वल्लभ कुल के तिलकायत गोस्वामी से ब्रह्म सम्बंध लिया। इस प्रकार शौर्य और अध्यात्म से जागृत मेवाड़ के गुहिलोत राजवंश में 19वीं शताब्दी में एक राज राजेश्वर संत महायोगी महाराज चतुर सिंह जी बावजी का जन्म हुआ। उन्होंने मेवाड़ में सवा सौ साल पहले अध्यात्मिक क्रांति के साथ ही राजनीति समस्याओं और जनजागृति के लिए जनभाषा मेवाड़ी का प्रयोग कर एक नए युग का सूत्रपात किया।

बावजी चतुर सिंह जी का जन्म मेवाड़ के महाराणा फतह सिंह जी के बड़े भाई और करजाली के जागीरदार महाराज सूरत सिंह जी व उनकी पत्नी कृष्ण कंवर के घर माघ कृष्णा चतुर्दशी संवत् 1936, तद्नुसार 9 फरवरी 1880 को हुआ। मेवाड़ राजवंश के से सम्बंधित भाइपा में करजाली-शिवरती परिवार के इतिहास पुरूषों में लोकप्रिय संत महाराज चतुर सिंह जी बावजी का नाम जन-जन में व्याप्त है। बावजी राजपरिवार के ऐश्वर्य को त्याग कर जीवन पर्यन्त आध्यात्मिक चेतना में लगे रहे और इसे उन्होंने सरस, सरल और मातृभाषा मेवाड़ी में अपने उपदेश जन-जन तक संप्रेषित किये। इसी कारण उन्हें योगेश्वर (योगीराज) कहा जाता है। शासन और सामंतीय व्यवस्था के गुण-अवगुण से राज्य की प्रजा को अपने काव्य और दर्शन के ग्रंथों के माध्यम से अवगत करवाया और समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन किया। इसी कारण उन्हें कई बार मेवाड़ का विवेकानंद कहकर सम्बोधित किया गया।

बावजी चतुरसिंह की बचपन से ही साहित्यिक अभिरूचि प्रगट हुई और उन्होंने विलक्षण प्रतिभा के बल पर संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेंच, अरबी, फारसी और मेवाड़ी भाषा और बोली पर समान अधिकार प्राप्त किया। उन्होंने समान रूप से भारतीय सनातन के आध्यात्मिक ग्रंथों के साथ अब्राहमिक मत-मजहबों के ग्रंथों का भी अध्ययन किया। पिता महाराज सूरत सिंह जी भी आध्यात्मिक प्रवृत्ती के पुरुष थे और सभी तीर्थ स्थल की यात्रा के दौरान अपने पुत्र चतुरसिंह को साथ ले गए। जिससे चतुरसिंह के बाल मन पर अध्यात्म और ईश्वर के प्रति आस्था का गहन प्रभाव पड़ा। साधु-संतों के साथ सत्संग ने उन्हें पूर्णरूप से अध्यात्म की ओर आकर्षित कर लिया लेकिन परिवारिक दबाव के चलते उन्होंने शेखावाटी के एक ठिकाने छापोली के ठाकुर साहब की पुत्री से विवाह करना स्वीकार कर लिया। इस विवाह से उन्हें एक पुत्री रत्न की प्राप्ति हुई। बावजी चतुर सिंह जी की पत्नी का 27 वर्ष की अल्पआयु में ही देवलोक हो गया। इस कारण अध्यात्म की ओर आकर्षित चतुरसिंह जी का अब सांसारिक मोह माया से भी दुराव हो गया और उन्होंने स्वयं को ईश्वर के प्रति समर्पित कर दिया। वे सच्चे अर्थों में राजयोगी थे जिनका सांसारिकता के प्रति कोई लगाव नहीं था।

बावजी चतुरसिंह जी सत्य की खोज में तीर्थों के भ्रमण को निकले। इनमें उन्होंने विशेष रूप से वृंदावन व नर्मदा नदी के तट पर स्थित तीर्थ और ज्योर्तिलिंग ओंकारेश्वर की यात्रा की। दोनों ही स्थानों पर वे ख्यातनाम संतों व योगियों से मिले। ओंकारेश्वर तीर्थ में आपकी योगीराज कमल भारती से भेंट हुई। योगीराज से उन्होंने शिष्यत्व प्रदान करने की प्रार्थना की किन्तु कमल भारती जी ने उन्हें मेवाड़ के बाठेड़ा ठिकाने के गांव लक्ष्मणपुरा के

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
October to December 2023, E-Journal, Vol. I, Issue XLIV

ठाकुर गुमानसिंह को योगीवीर्य बताते हुए अपना गुरु बनाने का संदेश दिया। इसके बाद वे उदयपुर लौट आए और लक्ष्मणपुरा जाकर योगीवीर्य ठाकुर गुमानसिंह का सान्निध्य प्राप्त कर शिष्यत्व ग्रहण किया। अब गुरु के निर्देशानुसार साधाना क्रम प्रवाहित होने लगा और वे सामान्य व्यक्ति से योगी के रूप में तैयार होने लगे।

इस प्रकार बावजी चतुरसिंह के प्रथम गुरु गुमानसिंह जी लक्ष्मणपुरा थे और उन्हें से उन्हें साधना और योगसिद्ध दोनों प्राप्त हुई। अब बावजी ने अपना आश्रम नउवा में एक कुटिर बना कर आरम्भ किया और अपना अधिक समय साधना में लगाया। वर्तमान में वहां उनका समाधि स्थल और स्मारक है। आपको आत्म साक्षात्कार संवत् 1978 में हुआ। इन्होंने योगेश्वर गुमान सिंह जी पाए आध्यात्मिक ज्ञान को जन–जन में प्रचारित करने के लिए मेवाड़ की राजधानी उदयपुर के निकट सुखेर गांव में आश्रम सुखधाम की स्थापना की। वर्तमान में यह आश्रम उदयपुर से निकल रहे राष्ट्रीय राज मार्ग संख्या–8 पर स्थित है। इस स्थान का अब हवा मगरी के नाम से जाना जाता है।

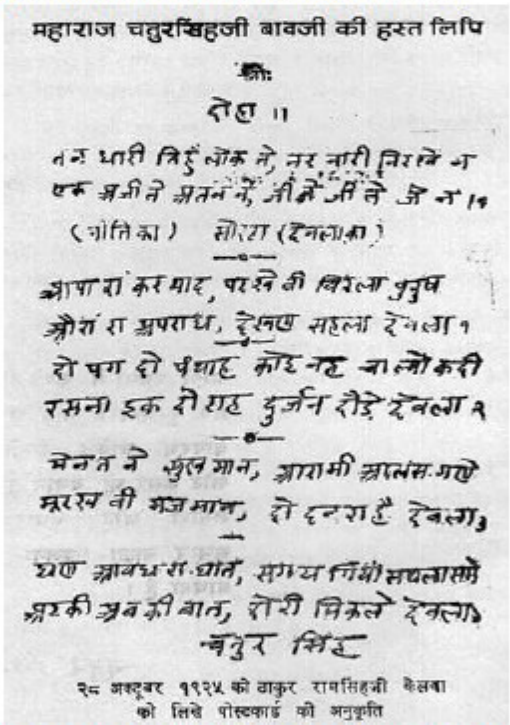

महाराज चतुरसिंहजी बावजी की हस्त लिपि

दोहा ॥

नर धारी तिहुं लोक में, नर नारी निरखे न
एक भजी ने भजन में, जी में जी ने जैन ।१

(गीतिका) सोरठा (रेनला)

आपा रा करमाद, परखे जी बिरला पुरुष
औरां रा अपराध, देखण सहला रेनला १

दो पग दो पंथाह, कोई नह चाल्यो कदी
रसना इक दो राह, दुर्जन दौड़े रेनला २

मेनत ने कुलमान, आरामी आलस गणे
मूरख री मजमान, दो दनरा है रेनला ३

घण आवध रा घाव, समय मिळी सचलासो
आंकी अब की बात, दोरी निकले रेनला ४

चतुर सिंह

२८ अक्तूबर १९२५ को ठाकुर रामसिंहजी कैलवा को लिखे पोस्टकार्ड की अनुकृति

आज से सौ वर्ष पूर्व महामारी के दौर में आपने जनता के हित के लिए कई राहत कार्य करवाए। आपने जैन शास्त्र, काश्मीर शैव सिद्धान्त के ग्रंथों, इस्लाम की मूल पुस्तक कुरान शरीफ, ईसाइयत के मूल ग्रंथ बाइबल का भी अध्ययन किया। मेवाड़ी भाषा के प्रचार और विस्तार के साथ उसमें साहित्य सृजन का प्रारम्भिक श्रेय बावजी चतुरसिंह जी को जाता है। उन्होंने गीता, योगसूत्र, सांख्यकारिका, मार्कण्डेयकृत चंद्रशेखर स्तोत पर मेवाडी भाष में टीका लिखी। आपने चतुर चिंतामणी, समान बत्तीसी, मानवचित्र रामचरित, अनुभव प्रकाश, लेख संग्रह आदि ग्रंथों का सृजन किया। बावजी की शोधा ग्रंथ व रचनाओं पर शोधार्थी शोध के रूप में उपयोग लेते हैं। बावजी की रचनाएं आज के परिप्रेक्ष्य में उपयोगी है। महिलाओं, दलितों, किसानों, नशामुक्ति आदि पर आपने सरल रचनाएं मेवाड़ी भाष में सृजित की। उन्होंने वेद, पुराण, उपनिषद्, महाकाव्यों आदि को मानव जीवन में उतारने पर बल दिया, जिससे की आज का युवा सही मार्ग प्रशस्त कर सके। बावजी ने आज की कुरीतियों के ऊपर सवा सौ साल पहले दारू (मदिरा) पररचना 'दारू री रीत' जिससे उन्होंने अपने काल में नवयुवकों को नशे से दूर रहने का संदेश दिया जो आज भी प्रासंगिक है।

दारू री दोय सदा शुरीती।
मरया पछे नरकं में पड़नो, जीता जीव फजिती।
जद शिशो पी मेट दी, मद पिवा री गाळ।
वो मादवी शिशोद अब, पिवे शिशा ढाल।

समय की कीमत पर नवयुवकों को अपनी रचना से समझाने को प्रयास किया –

कर कर वृथा थंथ दूजांरों, वेंडा वगत गमायो सारो।।
वी आछा ने वी खोटा तो, वी भोगेगा वांरो।।

बावजी ने भक्ति के निर्गुण तथ्यों को बडे ही सरल भावो और शब्दों में कह दिया –

यूं कंई पड़यो पसर ने डाकी, थारे कणी जगा जावा की लागी।
कठी पगरखी कठी अंगरखी, कठी पागड़ी न्हांखी।।
टिगट टेमरी खबर खोज नी, कटगी गाँठ टकां की।
घर घ जाण ठिहयो थूं गाफिल, रेल घणी दौड़ा की।।
चढ़े जणी में पड़े उतरमओ, या है रीत अठा की।
आयो कठूं कठे उतरेगा, कतरा टेशण बाकी।।
खादी भांग, गालमा कीधा, बोतल पीधी आखी।
कूण सुणे ने कीने केवां, हालत हाय नशा की।।
शंकर सावधान व्हे जाणो, देख दशा दूजा की।
यूं कंई पड़यो पसर ने डाकी, थारे कणी जगा जावा की लागी।।
दन आंथ्यो, थावया बळद, क्यारो पियो न एक।
वच मू क्यारो फूट ग्यो, हिया हूना जट देख।।

उनकी नवचेतना को जगाने वाली अमर पंक्तियां हैं, जो युगों युगों तक मानव के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती रहेगी। बावजी की शिक्षाओं से प्रेरित नाथद्वारा निवासी भूरी बाई नामक एक महिला हुई थी जो निरक्षर थी। उन्होंने सहज भक्ति, सहज ज्ञान, सहज वैराग्य, सहज व्यवहार की मार्ग चुना। भूरी बाई की काली पोथी और उनके आध्यात्मिक चैतन्य से प्रेरित होकर तत्कालीन आचार्य रजनीश जैसा दार्शनिक भी उनके साधाना केन्द्र अलख आश्रम नाथद्वारा में रहे। जिसका उल्लेख रजनीश ने अपने ग्रंथों में किया। वस्तुत: भूरी बाई संत शिरोमणि मीरा बाई, सहजो बाई, गवरी बाई, रूबिया की तरह से लोकसंत के रूप में विख्यात थे।

यूं ही सबा ही अणीज एक वात ने नरी तरै शू समझाई है, पण ई रो सही अर्थ तो केवल एक सतगुरू ही जाणे। लखवा वालो तो अणा अखरां रा घरां पे शतरंज रा रमणारी नांई अठी ने उठी करै है।

बावजी चतरसिंह जी की अलख पचीसी पर लिखी भूमिका स्वयं उनके कर्ता न मानने की भावों की अभिव्यक्ति तथा गुरु तथा शास्त्रों के प्रति आस्था देखने को मिलती है।

दुख ही दुख दशहु दिशा, दीखे दिन अरू रात।
सुख तो सकल सिधारियो, शेखावती से साथ।

इसी तरह उनका प्रजा के प्रति भी समभाव था। उन दिनों मेवाड़ के ठिकानों में राजपुत्रियों का विवाह होता तो एक विशेष लगान 'बाई बराड़' (चंवरी कर) एकत्रित होता था। बावजी की दो पुत्रियों के विवाह के समय जब बाई बराड़ एकत्रित की जाने लगी तो उन्होंने इसे पुन: ठिकानों को लौटाया तथा उस समय मेवाड़ के महाराणा से पैसे 5000 रुपए उधार लेकर विवाह सम्पन्न कराया। विवाह के कुछ समय पश्चात् ही उनकी पुत्री का भी स्वर्गवास हो गया। इस तरह उन्हें समाज, राज्य और प्रजा से बांधे रखने वाला आशासूत्र भी चला गया। इनको पुन: विवाह करने के लिए कहा गया परन्तु इन्होंने यह कहकर की मेरे मरने के बाद पत्नी भी दूसरा विवाह कर सकती है। उस समय के सामाजिक वातावरण में यह कठोर तंज था। तेलियों की सराय सुखेर आदि स्थानों पर अपना साधना बनाया तथा इसके बाद सुरम्य प्राकृतिक स्थान 'नऊवा' गांव में कोठरी बनाई तथा यहाँ पर साधना में डूबे रहने लगे। इसी गांव में आपको आत्मा साक्षात्कार हुआ।

आपने समाज में सुख सम्बन्धी सोच में बदलाव हेतु 'सुख समाज' नामक संस्था बनाई। इस संस्था द्वारा साप्ताहिक गोष्ठियों में प्रबुद्धजनों का रूझान बढ़ा। प्रति सप्ताह एक विषय लिया जाता। कविता, लेख आदि तैयार कर अगली साप्ताहिक बैठक में रखा जाता है। अध्यात्म के साधाकों के लिए शास्त्र की अपेक्षा गुरु का अधिक योगदान है। बावजी ने कहा था–

कागद कीडी रे जस्यो, वीं में वेद पुराण।
वीं में अक्खर एक नी, उद्या अलख पहचान।।
सांख्य योग सनातन पंथ से पूरो पाठ पढ़ायो।
तत्पद लंपद वाक्य अर्थ तज लक्ष्य स्वरूप लखायो।।
गुरु वचनों को मेख से, मन का घोडा बाँध।
ज्ञान अगाडी आन के प्रेम पिछाडी साथ।।

प्रेम ज्ञान का अनुवर्ती है यह साथ गुरूकृपा से प्राप्त हुआ। अलख पचीसी के पूर्ण होने व आत्म साक्षात्कार होने को दोहे में निम्नानुसार कहा है –

उगणी सो उठ्योत्तेरे, तीज पौष सुदमाण।
नऊवा नगरी में वणी, उथ्या अलख पछाण।।

आपका सहयोगी उदय लाल प्रमुख था। 'अलख पचीसी' की रचना के प्रत्येक दोहे के अंतिम पद 'उद्या अलख पछाण' के साथ समाप्त होता है। आपने अपने सहयोगी, भक्तों को इन पदों में अंकित किया है –

कन्नो काटे काकडी, देवो होजे दाल।
चतुर सिंह पोथी कणे, हवा मगरी री हाल।।
बगुला ताके मीन पै, जोगी ध्यान लगाय।
वैज्यो ताके सुरत पै, रामनाम जगसार।।
बड़ा बड़ा राज बचै, थारो भाग विशाल।
मैं नत बिन मनखा जलम, जीत्यो जैठालाल।।

वर्तमान में मावली तहसील के नउवा गांव में बावजी की साधना गति पकड़ चुकी थी। यहां पर भक्तिजनों के कारण भजन–कीर्तन के क्रम में चलते रहते। इसी क्रम में यहां पर डांगी जाती का कीका जैसा अनपढ़ कृषक भी आया करता था। कीका की तन्मयता (अपनी ही धुन में लगे रहने पर) देखकर बावजी का ध्यान उस पर गया। उससे वे अत्यंत प्रभावित हुए और उनके प्रगाढ़ सम्बन्ध हुए। बावजी कीका के घर पर आने जाने लगे तथा उन्हें कीका में राम (परमेश्वर) जैसी स्थिति का अनुभव हुआ जिसे उन्होंने इस दोहे में गाया।

दोड्या तीरथ दूर रा, म्हें रह्यो कंगाल।
कीका डांगी कर दियो, नउवा में ही न्याल।

बावजी को कीका डांगी के घर में राम रमते दिखे। इस अनुभव के प्रभाव में उन्होंने कीका डांगी की अधयात्म उड़ान की सबलता व ऊंचाई को इस दोहे में बताया।

मानो के मानो मति, कहणो म्हारो काम।
कीका डांगी रे कने, रमता लादा राम।।

इस प्रकार कीका डांगी जैसे दुर्लभ रत्न को बावजी ने पहचाना। इसी प्रकार उदयलाल डांगी उनकी सेवा में लगा रहता था। वह उनकी पुस्तकों के समूह को देखकर हंस दिया। बावजी ने हंसने का कारण पूछा तो उसने कहा कि बावजी आप अतरी पोथ्या भणोगा। इस पर बावजी ने चिंतन–मनन किया तो उन्हें अनुभूति हुई कि किसी एक विषय पर ही ध्यान केन्द्रीत करना होगा। इसके बाद बावजी ने केवल गीता पर ही अपना चिंतन स्थिर किया। इस प्रकार गीता का विश्लेषण करने वाले दोहो को उन्होंने अलख पच्चिसी के रूप में सृजित किया और इसमें उन्होंने उदा का सम्बोधित कर सृजन किया। यहां पर उनका उदा से तात्पर्य उदयशील व्यक्ति से है, जिसमें अलख यानि परमात्मा को पहचान का ज्ञान है।

अलख कहै सो आलसी, लख केश्वे नादान।
अलख लखी रो आसरो, उद्या अलख पिछाण।।
बकरी चरगी नार ने, पालो पाती जांण।
वीं बकरी रो ग्वाल है, उद्या अलख पछाण।।
कागद कीडी रे जश्यो, वींमें वेद कुराण।
वींमें अक्षर एक नी, उद्या अलख पिछाण।।
देखूं देखूं छोडने, दीखूं दूखूं ठांण।
ई दूखूं रो देखणों, उद्या अलख पिछाण।।
बाहर केवे बावला, अंतर कहे अजाण।
बाहर अंतर एक सो, उद्या अलख पिछाण।।
देबारी में उदयपुर, उदियापुर में राण।
वींरे राण दिवाण है, उद्या अलख पिछाण।।
जाणे सो ही जाणसी, या अण जाणी जाण।

नीतर ऊंथी ताणसी, उद्या अलख पिछाण।

आध्यात्मिक उन्नति के लिए किसी विशिष्ठ शैक्षिक डिग्रियों की आवश्यकता नहीं होती है। यह उद्या जैसे साधारण जन से ही समझी जा सकती है। यह बात बावजी चतुर सिंह ने दोहे में बतायी। बावजी द्वारा रचित दोहे में शुद्ध मेवाड़ी भाषा की प्रधानता है, क्योंकि उस समय कम पढ़े लिखे लोगों तक इसे समझने में कठिनाई कम रहती थी। साधारण जन मानस में जल्दी ही रच बस जाते थे। इस प्रकार संत बावजी चतुरसिंह जी ने योगी के रूप में तथा कवि के रूप में अपना जीवन पर्यन्त कर्म पथ पर चल कर हजारों साल पुरानी उस योग शिक्षा व ज्ञान को समाज व जन-जन में बताया। आपने जीवन भर स्थानीय भाषा मेवाड़ी का ही उपयोग अपने लेखन व दैनिक जीवन में किया जो आज की शिक्षा नीति में भी प्रासंगिक है।

आप द्वारा उस समय कथा प्रथम के लिए 'बाळकां री पोथी' किताब लिखी। इसको उन्होंने मेवाड़ी भाषा में लिखकर स्थानीय भाषा का पूरा समर्थन किया। आप द्वारा नर्मदा के तट पर जाकर आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने हेतु योगीराज कमल भारती को अपना गुरु माना परन्तु गुरु ने कहा तेरा गुरु मेवाड़ में ही है। इस बात की पुष्टि इनके परिवार के सदस्य श्री चन्द्रवीर सिंह राणावत ने बताया कि कहा बावजी चतुर सिंह जब नर्मदा तट पर योगियों के बीच रहकर योग साधना कर रहे थे तो उन्होंने वहां गुरु बनाने की सोची लेकिन वहां के योगी कमल भारती जिनको चतुर सिंह बावजी गुरु बनाना चाहते थे, कहा कि तेरा गुरु तो मेवाड़ में ही है। अध्यात्म में साधकों के लिए शास्त्र की अपेक्षा गुरु का अधिक योगदान रहता है। गुरु पद के प्रभाव की आप द्वारा रचित इन दोहों से परखा जा सकता हैं।

सांख्य योग सनातन पंथ से पूरा पाठ पढ़ायो।
तत्पद लंपट वाक्य अर्थ तज लक्ष्य स्वरूप पलखायो।।
गुरु वचनों को मेख से, मन का घोड़ा बाँध।
ज्ञान अगाड़ी आन के प्रेम पिछाड़ी साध।।

इन्होंने अध्यात्म के अलावा साहित्य में भी साधाना गद्य और पद्य में रचना करके की। अधिकांश ग्रन्थ मुक्तक शैली में है। आपने पूर्णत मेवाड़ी में ही लेखन किया। आपने एक मात्र मेवाड़ी भाषा में गीता के समश्लोकी अनुवाद ग्रन्थ लिखा है।

'योग सूत्र' : प्राणायाम रहस्य – श्वास प्रश्वास शूं इन्द्रिया चेते अर्थात् इन्द्रिया ने ज्ञान देहवे ने इन्द्रियां ने ज्ञान व्हेवा शूं मन वणे। क्यूं के इन्द्रिया रो झट झट गरणेरो स्वाव रो नाम हीजु मन है। मन शूं आखो संसार वणे अर्थात् निश्चय व्हेवे निश्चय शूं ही संसार है। पाछो अंवलो चालवा शूं यो मिटे। निश्चय मन में, मन इन्द्रियों में ने इन्द्रिया शांस प्रकृति में मिले जदी शास वा इन्द्रियां निश्चय आदि कई भी निस्वालश दीख जाय। जदी 'ऊ सब छुट मुक्ति व्हे' जाय है, ने ईरो उपाय, शांस में निश्चय शूं मन ने मिलावणों है। यो प्रणायाम करवा शूं व्हे है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. महाराज श्री चतुरसिंह जी बावजी (रचयिता), अलख पचीसी, भट्ट, श्याम सुन्दर एवं नौशालिया प्रेरणा (सम्पादक), प्रणव प्रकाशन, फतहपुरा उदयपुर, मकर संक्राति, विक्रम संवत् 2079
2. महाराज श्री चतुरसिंह जी बावजी (रचयिता), चतुर वचनामृत, प्रकाशक – महाराणा मेवाड़ पब्लिकेशन ट्रस्ट प्रकाशन, जन्म शती वर्ष 1980 ई.
3. महाराज श्री चतुरसिंह जी बावजी (रचयिता), बाळकां री पोथी, प्रकाशक – करजाली महाराज करण सिंह मेमोरियल फाउण्डेशन, उदयपुर, वर्ष 2022 ई.
4. महाराज श्री चतुरसिंह जी बावजी (रचयिता), मानवमित्र राम चरित्र, प्रकाशक – महाराणा मेवाड़ पब्लिकेशन ट्रस्ट प्रकाशन, जन्म शती वर्ष 1980 ई.
5. महाराज श्री चतुरसिंह जी बावजी (रचयिता), परमार्थ विचार, भाग 7, प्रकाशक – शिवशक्ति विद्यापीठ, उदयपुर, वि.सं. 2027
6. महाराज श्री चतुरसिंह जी बावजी (रचयिता), अनुभव प्रकाश, प्रकाशक – महाराणा मेवाड़ पब्लिकेशन ट्रस्ट प्रकाशन, जन्म शती वर्ष 1980 ई.
7. महाराज श्री चतुरसिंह जी बावजी (अनूदित), चन्द्रशेखर स्त्रोत तथा शिव महिम्न: स्त्रोत, प्रकाशक – महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन ट्रस्ट उदयपुर, वर्ष 2013 ई.
8. महाराज श्री चतुरसिंह जी बावजी (टीका कृत), सांख्य-कारिका तथा सांख्य-तत्व-समास, प्रकाशक – महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन ट्रस्ट उदयपुर, वर्ष 2013 ई.
9. महाराज श्री चतुरसिंह जी बावजी कृत, शेष चरित्र, प्रकाशक – महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन ट्रस्ट उदयपुर, वर्ष 2013 ई.
10. महाराज श्री चतुरसिंह जी बावजी कृत, चतुर चिन्तामणि, प्रकाशक – महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन ट्रस्ट उदयपुर, वर्ष 2014 ई.

****

Naveen Shodh Sansar
(An International Refereed/Peer Review Journal)

RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793
Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
Web: www.nssresearchjournal.com, Email: nssresearchjournal@gmail.com

Certificate Of Publication

Is here by awarding this certificate to Dr./Prof./Mr./Mrs./Ms.

Ramsingh Rathore

Professor (History) Pacific University, Udaipur (Raj.) INDIA

In recognition of the publication of the paper entitled

लोकसंत महाराज चतुरसिंह जी बावजी

Published in October to December 2023 E-Journal, Volume I, Issue XLIV

Ashish Narayan Sharma

ASHISH NARAYAN SHARMA
Chief Editor

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER
Scientific Journal Impact Factor
TOGETHER WE REACH THE GOAL
SSRN Tomorrow's Research Today
Google Scholar
Academia.edu share research

NATIONAL SEMINAR

on

FREEDOM FIGHTERS OF MEWAR-VAGAD : LIFE AND WORKS (1857-1947)

DECEMBER 2-3, 2022

Organized by :

DEPARTMENT OF HISTORY & CULTURE

MANIKYALAL VERMA SHRAMJEEVI COLLEGE

Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth (Deemed-to-be University) Udaipur -313001 (Rajasthan) INDIA

Certificate

This is to certify that Prof. / Dr. / Mr./Ms. रामसिंह राठौड़ शोधार्थी *of* पेसिफिक विश्वविद्यालय, उदयपुर *has participated / presented a paper/Chaired a session entitled* मेवाड़ महाराणा फतहसिंह "भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन का पक्षधर" *in the National Seminar and made a commendable contribution to the event.*

Col. Prof. S.S. Sarangdevot	*Prof. Suman Pamecha*	*Dr. Hemendra Choudhary*
Vice - Chancellor	Dean, Faculty of Social Sciences & Humanities	Seminar Director
JRN Rajasthan Vidyapeeth	MVS, College	
(Deemed-to-be- University)		

Azadi Ka Amrit Mahotsav

Department of History
Mohanlal Sukhadia University, Udaipur, India
International Conference
on
"Animals in the History of South Asia"
Date : 2nd and 3rd February, 2023

Certificate

This is certified that Prof./Dr./Mr./Ms.

RAM SINGH RATHORE

participated in an International Conference on

"Animals in the History of South Asia"

organized by Department of History,

Mohanlal Sukhadia University, Udaipur, India

on 2nd and 3rd February, 2023.

He/She has/ participated as Resource Person/presented paper titled

पौराणिक एवं इतिहास प्रसिद्ध महापुरुषों के विशिष्ट अश्व

Prof. Pratibha
Head of Department, History

Dr. Peeyush Bhadviya
Organizing Secretary

साहित्य संस्थान

जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ

(डीम्ड-टू-बी विश्वविद्यालय) उदयपुर

एवम्

लोकजन सेवा संस्थान, उदयपुर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

राजस्थान की कला एवं संस्कृति

फाल्गुन कृष्णा अष्टमी, विक्रम संवत् - 2079

मंगलवार, 14 फरवरी, 2023

प्रमाण - पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि प्रो. /डॉ./श्री/ श्रीमती /सुश्री .... राम सिंह राठौड़ ....

ने **'राजस्थान की कला एवं संस्कृति'** विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में .... पाग एवं पगड़ी ....

शीर्षक / विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया।

हम आपके यशस्वी जीवन की कामना करते हुए इतिहास विधा के क्षेत्र में निरन्तर सार्थक अवदान की अपेक्षा करते हैं।

प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत	डॉ. देव कोठारी	प्रो. जे. एस. खारकवाल
कुलपति	संगोष्ठी निदेशक	निदेशक
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ		साहित्य संस्थान